न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया

NEWSPAPERS ASSOCIATION OF INDIA

Volume XVII वर्ष 17 | No. 11 अंक: 11 | October-2012 अक्टूबर-2012 | Rs. 5/- per copy

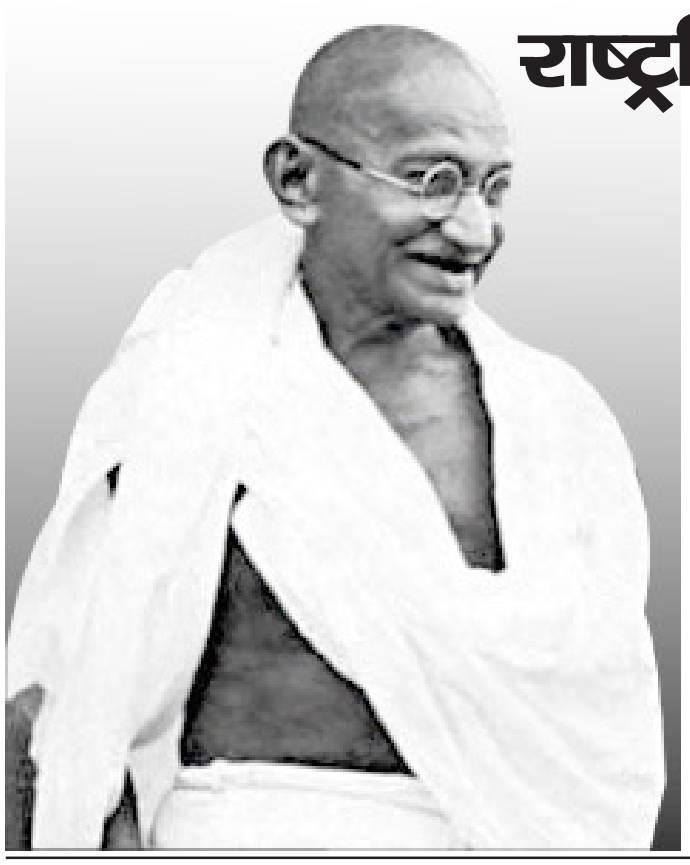

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को श्रद्धांजलि

साभारत के राष्ट्रपिता के सम्मान से सम्मानित महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व, उनके विचार तथा देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किए गए उनके संघर्ष उन्हें विश्व के महानतम् व्यक्तियों की ऐसी श्रेणी में खड़ा करते हैं, जहाँ उनकी बराबरी करने वाले कोई नहीं हैं। सादा जीवन तथा महात्मा गाँधी के अद्भुत् व्यक्तित्व के सामने केवल देशवासी ही नहीं वरन् विदेशी लोग भी नतमस्तक हुए हैं। आज भी सारा देश जिन्हें प्रेम व श्रद्धा से बापू कहकर सम्बोधित करता है, ऐसी महान् आत्मा महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात राज्य के काठियावाड़ जिले में पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता कर्मचन्द गाँधी राजकोट के दिवान थे तथा माता पुतली देवी अत्यन्त धार्मिक विचारों वाली धार्मिक महिला थी। बाल्यकाल में महात्मा गाँधी का नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी रखा गया तथा माता–पिता प्यार से उन्हें मोहन कहकर बुलाते थे। गाँधी जी की प्रारम्भिक शिक्षा पोरबन्दर के ही स्कूल में हुई। क्योंकि परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक थी, अतः वर्ष 1887 में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वर्ष 1888 में वे कानून की ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड चले गए। वर्ष 1891 में भारत वापिस लौटने पर उन्होंने अपनी वकालत आरम्भ कर दी। इंग्लैण्ड जाने से पूर्व उनका विवाह कस्तूरबा गाँधी से हो गया था। सीधी–सादी कस्तूरबा गाँधी को गाँधी जी ने घर में ही रहकर शिक्षित किया तथा कानून से संबंधित जानकारियाँ भी दी।

मैं हूं आम आदमी

एक गणतांत्रिक देश में जनता ही निजाम होती है । जब जनता सड़क पर आ जाए तो उस जनसैलाब की ताकत क्या होती है यह देश अगस्त क्रांति में देख चुका है, लेकिन क्या आम आदमी के लिए सडक से संसद तक की राह भी इतनी ही आसान होगी, इस पर संदेह है । जनआंदोलन के गर्भ से निकली टीम केजरीवाल की राजनैतिक पार्टी का भविष्य क्या है यह कहना अभी असामयिक कदम होगा । इस मुद्दे पर सभी के मन में असंख्य सवाल प्रहार कर रहे है । देश में कुल 1035 पंजीकृत राजनैतिक पार्टियों की भीघ्ड़ में क्या एक और पार्टी अपने पैर जमा पाएगी, मौजूदा 7 राष्ट्रीय पार्टियों को पीढ़ियों ने सींच कर फलों से लदा पेड़ बनाया है, ऐसे में इतिहास के खिलाफ खड़ी की गई इस राजनैतिक पार्टी की सफलता के पैमाने क्या होंगे, क्या इस पार्टी का स्वरूप, चरित्र बाकी सबसे अलग होगा । सिविल सोसायटी से तब्दील हुई इस राजनैतिक पार्टी का आगाज तो हो गया है अब अंजाम कब और क्या होगा यह कह पाना मुश्किल है । केजरीवाल के व्यवस्था परिवर्तन, भृष्टाचार मुक्त भारत या जनता को स्वराज दिलाने जैसे वादे फिलहाल सुखद सपने से लग रहे है, लेकिन यह नही भुलना चाहिये कि, साकार सपने ही होते है, जो टीम अरविंद जनता की ऑखो में दे चुकी है । असफलता के भय से दौड़ मे हिस्सा ही नही लेना समझदारी नही है ।दृढ़संकल्प और लगन से तो कछुआ भी जीत हासिल कर सकता है और अतिआत्मविश्वास से खरगोश भी मात खा सकता है । इसलिए टीम अरविंद की पार्टी की सफलता की संभावनाओं को भी नकारा नही जा सकता.

पार्टी का नाम तो 26 नवंबर को घोषित किया जायेगा, फिलहाल पार्टी का वैचारिक दस्तावेज (विजन डॉक्युमेंट) पेश किया गया है । कहा जा रहा है कि, पार्टी मे उम्मीदवार स्थानिय जनता और नेता तय करेंगे, पार्टी को मिलें फंड का ब्यौरा पारदर्शी होगा । मसौदे में राईट टू रिजेक्ट और रिकॉल भी शामिल है । विधायक और सांसद लाल बत्ती और बंगले का इस्तमाल नही करेंगे । उम्मीद जताई जा रही है कि आम आदमी की पार्टी देश की भटकी हुई राजनीति को नई दिशा देगी, जहां धर्म की राजनीति नही होगी, ईमानदार उम्मीदवारों का चयन होगा, आशावादी युवा राजनीति की ओर आकृष्ट होंगे जो राजनैतिक परिदृश्य बदलने के लिए बेहद जरुरी है ।

जनलोकपाल की लड़ाई में टीम अन्ना के सशक्त सिपाही रहे केजरीवाल की ईमानदारी पर किसी को संदेह नही है लेकिन वो अपनी राजनैतिक पारी में कैसा पर्दशन करतें है उस पर सबकी निगाहें और उम्मीद टीकी है । आंदोलन को तो भारी जनसमर्थन मिला था लेकिन क्या अन्ना के पूर्ण समर्थन के बगैर अरविंद की राजनैतिक पार्टी को वही जनसमर्थन और विश्वास मिल पाएगा । क्या जनता विफल आंदोलनकारियों को नेताओं के रूप में स्विकार करेगी । क्या यह पार्टी राजनैतिक गुर अपना पाएगी, जहां हर कालिख–कीचड़ से अपना दामन पाक साफ रखना संभव नही होगा । जहां दंद–फंद मिजाज ही चलते है क्या वहां सादगी और सरलता कोई कमाल दिखा पाएगी । केजरीवाल की राजनैतिक पार्टी क्या मौजूदा राजनेताओं को शिष्टाचार की राजनीति सीखा पाऐंगे। इन सब सवालों के जवाब केजरीवाल और उनकी पार्टी का भविष्य निर्धारित करेंगे और इसके लिए सबसे बड़ी चुनौती है जनता का समर्थन और विश्वास हासिल करना और उनमें जगाई उम्मीदों पर खरा उतरना ।

नफा या नुकसान.. एफ डी आई...

अजय कुमार मीना

इन दिनों एफ डी आई यानि सिदे तोर से विदेशी निवेश पर काफी खासा बवाल मचा है ,चारो तरफ हो हल्ला हो रहा है,सरकार इसे लागु करने मे दिलचस्पी ले रही है वही दूसरी और विरोधी पार्टिया इसका विरोध कर रही है, साथ मे वो लोग जो इस से प्रभावित होगे। पिछले दिनों हमने देखा इसके विरोध मे भारत बंद रहा, सरकार कि अहम पार्टी जब सरकार से अलग हो गई, सब ने अपने अपने स्तर पर शक्ति प्रदर्शन किया।

मगर यहाँ पर सब कुछ हो रहा है, आम जनता को समझ मे नही आ रहा आखिर एफ डी आई पर इतना बवाल क्यों ?आखिर है क्या एफडीआई ?और इस से क्या फायदा और क्या नुकसान होगा इस बात को न विरोध करने वाले समझा पाए और न दिलचस्पी लेने वाले समझा पाए। अभी मोटे तोर पर इसके विरोध मे सिर्फ यही कहा जा रहा है कि विदेशी निवेश अगर खुदरा व्यपार मे हुआ यानि अब खुदरा व्यपार का अधिकांश हिस्सा विदेशी कम्पनियो के हाथ होगा एसे में करोडो व्यपारी और उससे जुड़े लोग बेरोजगार हो जायेगे यानि सीधे–सीधे करोड़ो लोगो कि रोजी रोटी छीन जाएगी, वही दूसरी और कहा जा रहा है कि इसके आने से करोड़ो लोगो को रोजगार मिलेगा किसानों को उनकी फसल का उचित दाम मिलेगा, बाजारों से दलालों और बिचोलियो का सफाया होगा, और साथ मे ये भी कहा जा रहा है कि महंगाई भी कम होगी जिससे अभी सभी बुरी तरह से परेशान है।

जाहिर सी बात जब किसी व्यवस्था को शुरु किया जाता है तो उसके साइडइफेक्ट होते है यानि उससे लोग प्रभावित तो होते है, मगर उसका दूरगामी परिणाम क्या होगा वो हम सोच नही पाते है। हमें इस तरह कि जो भी नई शुरुआत होती है हमें डर लगता है कि इससे कही अपनी रोजी रोटी छीन न जाये यानि बेरोजगारी का डर। इतिहास गवाह है जब देश मे 1985 मे कंप्यूटर से काम करने कि प्रक्रिया तेज करने के लिए एक बिल पास किया था उस समय विरोधी पार्टियो और ट्रेड युनियनो का मानना था कि इससे लोग बेरोजगार हो जाएगे, 10 लोगो का काम एक अकेली मशीन करेगी, इसी डर के मारे उस समय केरल कि वाम मोर्चे कि सरकार ने एक आदेश जारी कर सभी सरकारी दफ्तरों मे, बैंक मे कंप्यूटर कि खरीद पर रोक लगा दी। लेकिन सोचने वाली बात है कि जिस कंप्यूटर से हम इतने डरे हुए थे आज उसी कंप्यूटर कि वजह से हमारी विश्व बाजार मे पहचान है कंप्यूटर सेक्टर मे हर साल लगभग ढाई लाख नौकरिया मिल रही है एक बात साफ है इस व्यवस्था के लागु होने से बाजार मे भ्रष्टाचार और बेईमानी का जाल बिछा पड़ा है वो जरुर खत्म हो जाएगा। किसानो से खरीदी गई उनकी फसल को दुगने और तिगने दामो मे बेचा जाता है इस लगाम लगेगा। खुदरा व्यापार मे विदेशी निवेश कितना कारगर होगा यह तो इसके लागु होने और यह पर आने पर साफ हो जाएगा लेकिन अभी जो देश मे चल रहा है सत्ता और विपक्ष का खेल इस बिच पिस रही है तो आम जनता कुर्सी का मोह इस कदर हो गया कि जिनके सहारे इस कुर्सी तक पहुचे उन्ही को भूल गए उभी को नजर अंदाज किया जा रहा है...

Wheat Grass: a Miracle Plant

Kalpana Karala
[D.Y.N, N.D.D.Y,
M.A (SOL, PRIKSHA MEDITATION YOG), PRANIC HEALER]

The wheat grass is a miracle plant. Scientists and soil experts, islolated over one hundred elements from fresh wheat grass juice and concluded that it is a complete food.

The chief constituent of wheat grass is chlorophyll, which is considered as a body cleanser, rebuilder and neutralizer of toxins. Many diseases like anemia, brain ulcers, skin diseases, stomach infections etc are cured by chlorophyll. Now, the question comes how it can work. The chlorophyll molecule bears close resemblance to hemoglobin, the R.B.C. pigmentation in human blood. The only difference is of element in which blood contains vion whereas chlorophyll contains magnesium. Scientists believed that chlorophyll is the natural blood building element for all pant eaters and humans. Chlorophyll, increases the functions of the heart, affects the vascular system, the intestines, uterus and lungs.

How to Grow and use Wheat Grass.

Wheat grass can be grown in any dark or sheltered place where direct rays of the sun do not reach, and here temperature is mild. The direct sun rays have a tendency to sap the strength from the grass.

Good Variety wheat should be soaked for 810 hrs, then water should be drained and grains allowed to sprout. Earthern pots should be used to grow whet grass. They should be filled with manure and wheat sproutes should be spared. They should be covered with a dark cloth or kept away from the sunlight. Sprinkle water once or twice a day and allowed to stay as for six to seven days and grass grows upto 6-8 inches high. Grass can be cut with a scissor. It should be immediately washed and ground. Juice should be extracted through a fine piece of cloth and taken it immediately as its efficancy reduces every minute and the medicine value is completely lost after 3 hrs.

Medicine Value

Wheat grass juice furnishes the body with vital nourishment providing extra energy to the body. Juice contains nearly 70% of chlorophyll. It is a rich source of vitamins A,B,C and contains minerals like calcium, iron, magnesium, phosphorus, potassium, sodium, sulphur, zinc. It purifier the blood due to its high vitamin and mineral contents. By drinking this juice regularly, toxins can be neutralized. It thus help to maintain good health.

Skin Diseases

Scientifically proved that chlorophyll stop the growth and development of harmful bacteria. Wheat grass juice therapy effectively used for skin diseases. Regular drinking of juice creates an unfavourable environment for bacteria growth. Poultice of juice can be applied on the infected area, as it is used as sterilizer also.

Digestive System Disorder

Wheat grass juice used as an enema, helps detoxify the walls of the colon. It is very helpful in disorders of the colon, mucus, chronic constipation and bleeding pits.

Circulating Disorder

Chlorophyll content present in wheat grass enhances heart and lung function. Capillary activity also increases, while toxemia is reduced. Increasing iron content in blood makes lungs function better. Level of oxygenated blood improver and effect of carbon dioxide minimized. Thus wheat grass juice is highly beneficial in the treatment of circulatory disorder.

Other Diseases

Diseases like arthritis, psoriasis, premature graying and falling of hair, general weakness, kidney stones, weak eye sight, abdominal pain, asthma, constipation, insomnia can be treated successfully by regular drinking of wheat grains juice.

It's official: 'Double patronage' for Hindi yet it languishes

Dinesh C Sharma

It may sound absurd but it is true - two ministries of the Indian government have been tasked with exactly the same mandate and are dutifully pumping in almost the same level of funding over the past half a century.

The task in question is promotion of Hindi as official language of the central government and the two ministries involved are the ministry of human resource development (MHRD) and the ministry of home affairs (MHA).

Both the ministries have an extensive web of directorates, subordinate offices, translation bureaus and training institutes spread across several cities in the country doing exactly the same thing in parallel.

They employ hundreds of officers, technical staff, translators and support staff and their budgets run over Rs 50 crore a year.

Not only are the two ministries duplicating work, two agencies within MHRD have the same objectives and execute the same kind of programmes.

The two agencies of MHRD promoting Hindi are - the Central Hindi Directorate, which is a subordinate officer of the department of higher education, and the Agrabased Kendriya Hindi Siskhan Mandal, also known as Central Hindi Institute or Kendriya Hindi Sansthan.Interestingly, both the agencies were set up in 1960 and have nearly the same objective.

The directorate has five regional offices, while the Sansthan has eight centres. The third agency of MHRD in the Commission for Scientific and Technical Terminology, also founded in 1960 for developing scientific terminology in Hindi and other Indian languages. The MHRD agencies had come under the scanner of the Expenditure Reforms Commission, which had recommended in 2000 that the directorate be abolished and the commission be reduced to a research cell within the Hindi Sansthan.

This was a legitimate objective and a large degree of success was achieved during the preceding five decades and much of the desired promotional work has been done , the panel headed by former finance secretary K.P. Geethakrishnan had observed. 'There is also an overlap in the functions of Hindi Directorate and Kendriya Hindi Sansthan.

These institutions no longer need to exist as separate institutions', the commission had observed. But the government simply dumped the recommendation. Now coming to the Hindi empire in the MHA, which is tasked with the implementation of Hindi as the official language though this has nothing to do with its core function of providing internal security.

MHA has an independent department of official language with an IAS officer as secretary. DOL has an array of eight 'Regional Implementation Offices' at different locations in addition to a string of subordinate offices.

These include Central Hindi Training Institute, Delhi, with five sub-institutes all over India, Central Translation Bureau and Central Institute of Indian Languages at Mysore.

In addition, overlapping bodies such as the National Translation Mission and Linguistic Data Consortium on Indian Languages also exist. DOL also has the Committee of Parliament on Official Language 'Each of the bodies under DOL is superfluous.

Where is the need for Central Translation Bureau when each ministry and PSU has its own set of translators?

Why have Central Hindi Training Institute when Hindi Sansthan and other centres are offering the same courses? Why have so many regional offices when you can get implementation reports in Delhi via email?'

questioned a senior government official. This apart, efficiency is an issue. 'If we send training manuals to be translated to the Central Translation Bureau, we have to wait in a queue. The current waiting period is five years. In any case , they are outsourcing translation', pointed out Hindi officer of a PSU bank based in Mumbai.

He said the regional implementation offices have become the hotbed of corruption. 'Whenever regional officers come for inspection, all they want is costly gifts like mobile phones. If we don't oblige, the inspector gives a negative report,' he alleged.

DOL has been using the Committee of Parliament on Official Language as a shield to protect itself.

Members of this panel tour government offices, banks and PSUs at different locations for inspecting the implementation of Hindi as the official language.

'This is a farce. These visits are used for lavish treatment of MPs, and for political patronage,' an official said.

Mohandas Karamchand Gandhi

Early Life:

Mohandas Karamchand Gandhi was born on 2 October 1869 in Porbandar, a coastal town which was then part of the Bombay Presidency, British India.He was born in his ancestral home, now known as Kirti Mandir. His father, Karamchand Gandhi (1822-1885), who belonged to the HinduModh community, served as the diwan (a high official) of Porbander state, a small princely state in the Kathiawar Agency of British India. His grandfather was Uttamchand Gandhi, also called Utta Gandhi.[11] His mother, Putlibai, who came from the Pranami Vaishnava community, was Karamchand's fourth wife, the first three wives having apparently died in childbirth.Jain ideas and practices powerfully influenced Gandhi, particularly through his mother, who was a devout Jain.

English barrister

In May 1883, the 13-year-old Mohandas was married to 14-year-old Kasturbai Makhanji (her first name was usually shortened to "Kasturba", and affectionately to "Ba") in an arranged child marriage, according to the custom of the region.In the process, he lost a year at school. Recalling the day of their marriage, he once said, "As we didn't know much about marriage, for us it meant only wearing new clothes, eating sweets and playing with relatives." However, as was prevailing tradition, the adolescent bride was to spend much time at her parents' house, and away from her husband. In 1885, when Gandhi was 15, the couple's first child was born, but survived only a few days. Gandhi's father, Karamchand Gandhi, had also died earlier that year.

Mohandas and Kasturba had four more children, all sons: Harilal, born in 1888; Manilal, born in 1892; Ramdas, born in 1897; andDevdas, born in 1900.At his middle school in Porbandar and high school in Rajkot, Gandhi remained a mediocre student. He shone neither in the classroom nor on the playing field.

In 1888, Gandhi travelled to London, England, to study law at University College London, where he studied Indian law and jurisprudence and to train as a barrister at theInner Temple. His time in London was influenced by a vow he had made to his mother upon leaving India, in the presence of a Jain monk, to observe the Hindu precepts of abstinence from meat and alcohol as well as of promiscuity. Gandhi tried to adopt "English" customs, including taking dancing lessons for example. However, he could not appreciate the bland vegetarian food offered by his landlady and was frequently hungry until he found one of London's few vegetarian restaurants. Influenced by Henry Salt's writing, he joined the Vegetarian Society, was elected to its executive committee, and started a local Bayswater chapter.Some of the vegetarians he met were members of the osophical Society, which had been founded in 1875 to further universal brotherhood, and which was devoted to the study of Buddhist andHindu literature.

Gandhi was called to the bar in June 1891 and then left London for India, where he learned that his mother had died while he was in London and that his family had kept the news from him.His attempts at establishing a law practice in Bombay failed because he was too shy to speak up in court. He returned to Rajkot to make a modest living drafting petitions for litigants but was forced to close it when he ran afoul of a British officer.[13][24] In 1893, he accepted a year-long contract from Dada Abdulla & Co., an Indian firm, to a post in the Colony of Natal, South Africa, then part of the British Empire.

Civil rights movement in South Africa (1893-1914)

Gandhi spent 21 years in South Africa, where he developed his political views, ethics and political leadership skills. Indians in South Africa were led by wealthy Muslims, who employed Gandhi as a lawyer, and by impoverished Hindu indentured laborers with very limited rights. Gandhi considered them all to be Indians, taking a lifetime view that "Indianness" transcended religion and caste. He believed he could bridge historic differences, especially regarding religion, and he took that belief back to India where he tried to implement it. The South African experience exposed handicaps to Gandhi that he had not known about. He realised he was out of contact with the enormous complexities of religious and cultural life in India, and believed he understood India by getting to know and leading Indians in South Africa.

Gandhi extended his original period of stay in South Africa to assist Indians in opposing a bill to deny them the right to vote. Though unable to halt the bill's passage, his campaign was successful in drawing attention to the grievances of Indians in South Africa. He helped found the Natal Indian Congress in 1894, and through this organisation, he moulded the Indian community of South Africa into a unified political force.

In 1906, the Transvaal government promulgated a new Act compelling registration of the colony's Indian population. At a mass protest meeting held in Johannesburg on 11 September that year, Gandhi adopted his still evolving methodology of Satyagraha (devotion to the truth), or non-violent protest, for the first time.He urged Indians to defy the new law and to suffer the punishments for doing so. The community adopted this plan, and during the ensuing seven-year struggle, thousands of Indians were jailed, flogged, or shot for striking, refusing to register, for burning their registration cards or engaging in other forms of non-violent resistance.

Struggle for Indian Independence (1915-47)

In 1915, Gandhi returned to India permanently. He brought an international reputation as a leading Indian nationalist, theorist and organizer. He joined the Indian National Congress and was introduced to Indian issues, politics and the Indian people primarily by Gopal Krishna Gokhale. Gokhale was a key leader of the Congress Party best known for his restraint and moderation, and his insistence on working inside the system. Gandhi took Gokhale's liberal approach based on British

Whiggish traditions and transformed it to make it look wholly Indian.

Gandhi took leadership of Congress in 1920 and began a steady escalation of demands (with Intermittent compromises or pauses) until on 26 January 1930 the Indian National Congress declared the independence of India. The British did not recognize that and more negotiations ensued, with Congress taking a role in provincial government in the late 1930s. Gandhi and Congress withdrew their support of the Raj when the Viceroy declared war on Germany in September 1939 without consulting anyone. Tensions escalated until Gandhi demanded immediate independence in 1942 and the British responded by imprisoning him and tens of thousands of Congress leaders for the duration. Meanwhile the Muslim League did cooperate with Britain and moved, against Gandhi's strong opposition, to demands for a totally separate Muslim state of Pakistan. In August 1947 the British partitioned the land, with India and Pakistan each achieving independence on terms Gandhi disapproved.

Assassination

On 30 January 1948, Gandhi was shot while he was walking to a platform from which he was to address a prayer meeting. The assassin, Nathuram Godse, was a Hindu nationalist with links to the extremist Hindu Mahasabha, who held Gandhi responsible for weakening India by insisting upon a payment to Pakistan.[106] Godse and his co-conspirator Narayan Apte were later tried and convicted; they were executed on 15 November 1949. Gandhi's memorial (or Sam?dhi) at R?j Gh?t, New Delhi, bears the epigraph "H? Ram", (Devanagari: ?? ! ??? or, He R?m), which may be translated as "Oh God". These are widely believed to be Gandhi's last words after he was shot, though the veracity of this statement has been disputed.Prime Minister Jawaharlal Nehruaddressed the nation through radio:

Funeral procession of Gandhi at New Delhi on 6 February 1948

Gandhi's death was mourned nationwide. Over 2 million people joined the 5 mile long funeral procession that took over 5 hours to reach Raj Ghat from Birla house, where he was assassinated. Gandhi's body was transported on a weapons carrier, whose chassis was dismantled overnight to allow a high-floor to be installed so that people could catch a glimpse of his body. The engine of the vehicle was not used, instead 4 drag-ropes manned by 50 people each pulled the vehicle.[1All Indian owned establishments in London remained closed in mourning as thousands of people from all faiths and denominations and

Indians from all over Britain converged at India House in London.

Professor Yasmin Khan argues that Gandhi's death and funeral helped consolidate the authority of the new Indian state. With Nehru and Patel in charge, the government made sure everyone knew the guilty party was not a Muslim. Congress tightly controlled the epic public displays of grief over a two-week period-the funeral, mortuary rituals and distribution of the martyr's ashes-as millions participated and hundreds of millions watched. The goal was to assert the power of the government and legitimize the Congress Party's control.

Ashes

By Hindu tradition the ashes were to be spread on a river. Gandhi's ashes were poured into urns which were sent across India for memorial services. Most were immersed at the Sangam at Allahabad on 12 February 1948, but some were secretly taken away. In 1997, Tushar Gandhi immersed the contents of one urn, found in a bank vault and reclaimed through the courts, at the Sangam at Allahabad. Some of Gandhi's ashes were scattered at the source of the Nile River near Jinja, Uganda, and a memorial plaque marks the event. On 30 January 2008, the contents of another urn were immersed at Girgaum Chowpatty. Another urn is at the palaceof the Aga Khan in Pune (where he had been imprisoned from 1942 to 1944) and another in the Self-Realization Fellowship Lake Shrine in Los Angeles.

सम्पादकीय

क्या मीडिया रहेगा समाज का आइना ?

❑ विपिन गौड़

उन्होंने कलम उठाई मुझे लगा कुछ अच्छा लिखेंगे, पर वो तुरंत बोल पड़े स्याही खत्म है। देश मई मीडिया की एक अलग भूमिका है पर मीडिया की इस भूमिका पे कई सवाल उठ रहे है व कही दाग भी लग गए हैं समाज का आइना होता है मीडिया पत्रकारिता पर क्या समाज का आइना साफ है शायद नहीं अब इस समाज के आईने मे धुन्दलापन आ गया है देश का चोथा स्तंभ देश के संविधान की मर्यादा के पालन को लेकर सामाजिक हितो की रास्ट्रीय आवाज बनाने मे लोकतंत्र के चोथे स्थाम्ब के रूप मे इस मीडिया शक्ति से बड़ा कोई भी लोकपाल वैकल्पिक जवाबदेही नहीं निभा पा रहा है जिसे जनतंत्र की आवाज कहा जा सके। समाचार पत्रों के प्रतिनिधि समाज प्रहरियों की भूमिका ने ही देश की आजादी की लड़ाई से लेकर आजतक भारत को विशव सचेतक बनाने की मंजिल को आसन रास्ता दिया है ६ मीडिया ने राजनेतिक कोशालता प्रोत्साहित करने मे कई सहायिक कदम उठाए है व देश मे हो रही किसी भी गतिविधि को समाज से संसद तक पहुँचाया है पर फिर भी आज देश मे पत्रकारिता खत्म होती जा रही है आज पत्रकार शब्द की मरियादा कम हो गई है आम जनता का भरोसा मीडिया पे टिका हुआ है पर पता नहीं आम जनता का पत्रकारिता पे बना रहेगा या नहीं

कई अच्छे पत्रकारों से मुलाकात की पर उनका दुःख सुन के बहुत दुःख हुआ बड़े बड़े मीडिया संस्थानों मे आज पत्रकार परेशान है कुछ पत्रकारों की आप इपजप`नदप उनका ामीदं था वोह समाज मे होने वाली बुराइयों के खिलाफ खोज करके अच्छी खबर इंदंजम है अपना समय देते है की समाज मे होने वाली बुराइयों को प्रकाशित करके उसे किसी तरह खत्म किया जाए पर जब वो अपनी खबर संसथान के उच्च पद के पत्रकारों को देते है तो वो उस खबर को प्रकाशित नहीं करते क्यूंकि वोह खबर किसी व्यक्ति विशेष के बारे मे होती है वोह खबर बिक जाती है और असल पत्रकारिता को कुचल दिया जाता है और पत्रकार की साड़ी मेहनत मिटटी मे मिलजाती है और वो इस संधर्ब मे शिकायत करे तो नोकरी से हाथ धोने पड़ जाते है और फिर दो हे रस्ते रहते है पहला की बस पत्रकारिता छोड़ कर बस एक नोकरी करे या संसथान को छोड़ कर अपना खुद का समाचार प्रकाशित करे पर खुद का समाचार प्रकाशित करे तो धन की समस्या और भी कई तरह की समस्या आती है। पर कुछ लोगों ने तो अब समाचारपत्र प्रकाशित करने का धंदा शुरू कर दिया है मीडिया को व्यवसाय बना दिया है जो सिर्फ भयादोहन के लिए समाचार प्रकाशित कर रहे है जिन्हें पत्रकारिता का मतलब भी नहीं पता है वो भी पत्रकार बन बेठे है अपने आपको पत्रकार बोलके लोगों से पैसे वसूलने लगे है जहाँ एक तरफ अन्य विभागों के आधिकारी निर्मित वस्तु के लिए पैसा वसूली करते है वहीँ एक नाम और जुड़ गया है नकली पत्रकारों का और उनकी वजह से सभी अच्छे पत्रकारों का भी नाम खघ्राब होता जा रहा है ६ आज नई युवा पीडी मीडिया जगत मे पत्रकारिता करने के लिए कम खुद का प्रचार करने लिए जादा आ रही है इसी तरह कई लोग अपने प्रचार के लिए समाचार पत्र प्रकाशित कर रहे है आज देश मे 80 हजार से भी जादा पत्र पत्रिकाएँ पंजीकृत है पर सिर्फ 10 प्रतिशत भी शायद प्रकाशित होती हो। हाल ही मे एक वाक्य मेरे सामने हुआ उत्तर प्रदेश सरकार की एक विभाग के जनसंपर्क अधिकारी के साथ कुछ बड़े संस्थानों के तथाकथित पत्रकारों को कोई फर्क नहीं पड़ता पत्रकारिता से , जनसंपर्क अधिकारी उन सब के सामने पत्रकारों के बारे मे अन्नाब शनाब कह रहे थे परन्तु उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ रहा था वो हंस रहे थे जबकि वोह खुद को पत्रकार कहते है क्या यही है पत्रकारिता शायद कुछ इसी तरह के लोगों द्वारा पत्रकारिता की गरिमा को खराब कर रहे है अगर इसी तरह चलता रहा तो देश का चोथा स्तंभ हमेशा सिर्फ नाम के लिए रह जाएगा आम आदमी का विश्वाश मीडिया से उठ जाएगा और फिर शायद पत्रकारिता सिर्फ एक नोकरी बनके रह जाएगी और इसे रोकने के लिए जरुरत है सभी पत्रकारों को एक मंच पे आने की और एक जुट होकर पत्रकारिता को बचाएं और चोथे स्तंभ को पक्का और मजबूत बनाए। कलम उठाई तो कुछ ऐसा लिख जाए पत्रकारिता का नाम ऊँचा कर जाए।

राजभाषा हिन्दी दिवस

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी

❑ दिलीप कुमार

हर इंसान की एक पहचान होती है. यह पहचान कई रूपों में होती है लेकिन जो चीज सबसे पहले झलकती है वह है उस इंसान की बोली। मसलन अगर कोई पंजाबी है तो यह उसके बोलते ही पता चल जाएगा इसी तरह अगर कोई अंग्रेज है तो उसके बोलने का तरीका ही बता देगा कि उसकी असल पहचान क्या है। इसी तरह एक हिंदुस्तानी की असली पहचान हिंदी भाषा होती है।

हिन्दी ना सिर्फ हमारी मातृभाषा है बल्कि यह भारत की राजभाषा भी है. संविधान ने 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया था। भारतीय संविधान के भाग 17 के

अध्याय की धारा 343 (1) में यह वर्णित है कि "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप अंतर्राष्ट्रीय होगा। इसके बाद साल 1953 में हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

यह तो बात थी आजाद भारत में हिन्दी के महत्व की लेकिन हिन्दी का इतिहास आजादी के सदियों साल पुराना है. हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानते हैं। इसके बिना हमारी कोई पहचान ही नहीं है। संसार में चीनी के बाद हिन्दी सबसे विशाल जनसमूह की भाषा है. भारत में अनेक उन्नत और समृद्ध भाषाएं हैं किंतु हिन्दी सबसे अधिक व्यापक क्षेत्र में और सबसे अधिक लोगों द्वारा समझी जाने वाली भाषा है. जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं कि राष्ट्रभाषा किसी भी देश की पहचान और गौरव होती है लेकिन भारत जो करीब दो सौ सालों तक अंग्रेजों का गुलाम रहा उसने अपनी इस अनमोल विरासत को कहीं खो सा दिया है. आलम यह है कि आज हिन्दी भाषा गौरव की नहीं बल्कि शर्म की भाषा होती जा रही है। प्रगति और विकास की राह में लोग हिन्दी को तुच्छ मानते हैं. टेक्नॉलोजी और विज्ञान के इस दौर में आपने इंग्लिश स्पीकिंग कोर्सों की दुकान तो बहुत देखी होगी लेकिन हिन्दी सिखाने के लिए प्राइवेट कोचिंग सेंटर तो दूर टीचर भी नहीं मिलते. आज हर भारतीय अपने बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए अच्छी से अच्छी शिक्षा की वकालत करता है और अच्छे स्कूल में डालता है. इन स्कूलों में विदेशी भाषाएं तो बखूबी सिखाई जाती हैं लेकिन हिन्दी की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया जाता वजह और कारण बेहद हास्यपद हैं. कुछ लोगों का कहना होता है कि "हिन्दी का मार्केट थोड़ा डाउन है और आगे जाकर इसमें कोई खास मौके नहीं मिलते।"

आज देश में हर दूसरा न्यूज चौनल हिन्दी में आता है। हजारों अखबार हिन्दी में छपते हैं. लेकिन फिर भी नौकरियों की कमी है. लेकिन हिन्दी का समर्थन करने का मतलब यह नहीं है कि आप अन्य भाषाएं सीखें ही ना. हिन्दी भाषा का सम्मान करने का अर्थ है आपको हिन्दी आनी चाहिए और सार्वजनिक स्थलों पर हिन्दी में वार्तालाप करने में आपको शर्म या झिझक नहीं होनी चाहिए. आज "हिन्दी दिवस" जैसा दिन मात्र एक औपचारिकता बन कर रह गई है जब लोग गुम हो चुकी अपनी मातृभाषा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं वरना क्या कभी आपने चीनी दिवस या फ्रेंच दिवस या अंग्रेजी दिवस के बारे में सुना है. हिन्दी दिवस मनाने का अर्थ है गुम हो रही हिन्दी को बचाने के लिए एक प्रयास, प्यारे पाठकों, आज का युवा अपनी जमीन से तो दूर होता ही जा रहा है लेकिन अगर वह अपने वजूद और अपनी पहचान को भी खो दे तो यह अच्छा नहीं होगा. एक हिन्दुस्तानी को कम से कम अपनी भाषा यानि हिन्दी तो आनी ही चाहिए. साथ ही हमें हिन्दी का सम्मान भी करना सीखना होगा।

भारत में बढ़ता बाल दुराचार

❑ बेसिल जोसेफ

समाचार पत्रो और न्यूज चैनेल में आए दिन ये खबरे प्रसारित होती हैं ६ साल की बच्ची के साथ बलात्कार की कोशिश ३ साल की बच्ची किसी खेत में लाहुलुहान हालत में पाई गयी शिक्षक ने अपनी छात्रा के कपड़े उतारने पेर विवश किया, ऐसी घटनाओ में ६ साल से १६ साल तक के किशोर होते हैं। हर साल भारत में करीब ५५ प्रतिशत बच्चे दुराचार के शिकार होते हैं और ये करने वाले उनके अपने ही रिश्तेदार, जानकार, सहपाठी, पड़ोसी, शिक्षक होते हैं और अंजान कम होते हैं। बच्चो के साथ इस तरह की घटनाए बाल मन और विकास पर कुप्रभाव डालती हैं,उनका विकास रुक जाता है और मन से आहत बच्चे डरे डरे सहमे सहमे रहते हैं,समाज से कट जाते हैं,स्कूल जाने से डरते हैं यहा तक खाना पीना छोड़ देते हैं,और अभिभावक उनके इस व्यहवार के कारण को समझने की बजाए उन्हे जिद्दी कहते हैं या पिटाई करते हैं या किसी चीज के लालच से अपनी बात मनवाने की कोशिश करते हैं लेकिन बच्चे के मन की पीड़ा को समझ नही पाते समस्त अभिभावको से निवेदन है की उपरोक्त लक्षणो में से कोई एक भी लक्षण अपने बच्चो में दिखे तो उसे पीट कर फटकार कर नही अपितु मनोचिकित्सक के पास ले जायें और उनके मान की बात जानने का प्रयास करे,अगर प्राइमरी स्कूल में ही बच्चो का अलग पीरियड ले कर उन्हे सेफ टच और अनसेफ टच के बारे में समझाया जाए और अभिभावक भी संकोच त्याग कर बच्चो को समाज के व्याप्त इस बुराई के खिलाफ सचेत करे तो ऐसी घटनाए २५: कम हो जाएँगी,देखा गया है की अभिभावक भी दोषी का पता लगने के बाद भी कोई कार्यवाही नही करते अपितु मामले को दबा देते हैं जिससे समाज में बदनामी ना हो और ऐसा करके वो इस दुराचार को बढ़ावा देते हैं क्योकि जो काम आज उनके बच्चो के साथ हुआ है कल किसी और के बच्चे के साथ हो सकता है। अभिभावको की चुप्पी की वजेह से ही ऐसे असामाजिक तत्व बेखौफ घूमते हैं और पुलिस उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नही कर पाती। कुछ साल पहले मैं शिमला में था वहाँ मैने खुद एक छात्रा को एक ठेकेदार के चुंगल से छुड़ाया था मैने और मेरे भाई ने देखा की एक छोटी सी बच्ची रो रही थी पूछने पेर पता चला उस ठेकेदार ने छात्रा को पानी पिलाने के मकसद से कमरे में ले गया और दरवाजा बंद कर दिया छात्रा की चीख सुन कर दरवाजा खुलवाया किसी तरह छात्रा ने दरवाजा खोला और उस आरोपी को पुलिस को सौपा गया इससे उस छात्रा को बचाया गया लेकिन हर किसी की किस्मत ऐसी नही है दोस्तो, जनता को जागरूक होना पड़ेगा क्योकि ये हम सब की ढील का नतीजा है की समाज में हमारे बच्चे सुरक्षित नही हैं अगर समय रहते हम सचेत नही हुए तो ये गंदगी समाज में एक बड़ा रूप ले लेगी और हमारे देश का भविष्य कहे जाने वाले हमारे बच्चे देश का भविष्य नही अपितु देश पर बोझ कहलाएँगे।

पाखंड और लूट की सत्ता के खिलाफ एक वैचारिक संघर्ष है 'महाभोज'

पटना के कालिदास रंगालय में हिरावल द्वारा 'महाभोज' के दो दिवसीय मंचन की युवा लेखक-पत्रकार सुधीर सुमन की रिपोर्ट

पटना। बिहार की चर्चित नाट्य संस्था 'हिरावल' ने 24–25 सितंबर को पटना के कालिदास रंगालय में मन्नू भंडारी के बहुचर्चित नाटक 'महाभोज' का मंचन किया। तीन दशक से लगातार देश भर में मंचित किया जाने वाला यह नाटक आज के बिहार के राजनीतिक सन्दर्भ में बेहद प्रासंगिक लगा। जबकि इस नाटक के लिखे जाने से लेकर अब तक सत्ता के झंडों के कई रंग बदले हैं, लेकिन सत्ता के पाखंड, सामंती शक्तियों पर उसकी निर्भरता और उसके द्वारा नौकरशाही और मीडिया का अपने निहित स्वार्थ में इस्तेमाल की हकीकत के लिहाज से नाटक का मुख्यमंत्री दा साहब आज भी बेहद जाना–पहचाना चरित्र लगता है। एक ओर वह वोट के लिए खेत मजदूरों और दलितों के विकास के लिये योजनाओं की घोषणाएं करता है, तो दूसरी ओर वह उनका दमन–उत्पीड़न करने वाली सामंती शक्तियों का हितैषी बना रहता है। पक्ष–विपक्ष की शासकवर्गीय पार्टियों का गरीब–मेहनतकश वर्ग के साथ सिर्फ चुनावी फायदे और नुकसान का रिश्ता दिखता है, कोई उनकी जिंदगी को बुनियादी तौर पर बदलना नहीं चाहता, दोनों सामंती शक्तियों के प्रतिनिधि जोरावर सिंह को अपने पक्ष में इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं।

मन्नू भंडारी लिखित इस नाटक की पहली प्रस्तुति आज से तीस साल पहले एनएसडी के रंगमंडल की ओर से दिल्ली में की गई थी। हिरावल ने आज से दस साल पहले भी इस नाटक का मंचन किया था। वैचारिक तौर पर यह अत्यंत गम्भीर, यथार्थपरक और बहसतलब नाटक है। बिहार की राजनीति के लिये तो मानो आज भी एक प्रभावशाली आईना है। महाभोज में बिसू नामक एक खेत मजदूर की हत्या का प्रसंग है, जो खेत मजदूरों को उनके अधिकारों के लिये जागरूक कर रहा था और आगजनी के जरिय जला कर मार दिये गये गरीबों–दलितों के हत्यारों को सजा दिलाने के लिये संघर्ष कर रहा था। उसकी हत्या के बाद नाटक में मुख्यमंत्री दा साहब और विपक्षी पार्टी के सुकुल जी उपचुनाव में दलितों को अपने–अपने पक्ष में संगठित करने की हर सम्भव कोशिश करते हैं। इस कोशिश में सत्ता मीडिया और नौकरशाही का खुलकर इस्तेमाल करती है। हत्या के जिस सच को लेकर बीसू के दोस्त बिंदा और रिसर्चर महेश संघर्ष करते हैं, दा साहब के इशारे पर उस सच को ही पलट दिया जाता है और बिंदा को ही हत्यारा साबित कर दिया जाता है। अपने हक अधिकार के लिए आंदोलन करने वालों को ही गुनाहगार साबित करके जेल में डाल देने की कई घटनाओं से नाटक के इस प्रसंग का प्रत्यक्ष संबंध जुड़ जाता है।

थानेदार, अखबार का सम्घ्पादक, डीआइजी और पक्ष–विपक्ष के नेता–सबके गरीब विरोधी चरित्र को नाटक ने बड़ी कुशलता से पर्दाफाश किया। मौजूदा तंत्र समाज के आखिरी आदमी के प्रति कितना निर्मम है, इसे इस नाट्य प्रस्तुति ने बडेध कारगर तरीके से पेश किया। अपने साथी बीसू के हत्यारों को सजा दिलाने के लिए संघर्ष कर रहा बिंदा कहता है– ''कुछ नहीं करेगी यहाँ की पुलिस। कोई कुछ नहीं करेगा। अखबार वालों के पास गये, छापना तो दूर, बात तक नहीं की। आगजनी का कइसा ब्योरा छापा था३.अब जाने कउन साँप सूँघ गया है! सब के सब बिक गये हैं।'' गाँव में कास्ट और क्लास विषय पर रिसर्च करने पहुँचे महेश शर्मा से बहस करते हुए वह दो टूक पूछता है– 'जरा बताओ, कउन मिटाएगा अमीर–गरीब का ई भेद? तुम तो डेढ़ महीने से हियाँ साइकिल पे घूम–घूमके अउर किताबें पढ़–पढ़के गांव जानि रहे हो।३. थीसस लिखोगे गाँव पे। ३अइसे जाना जाता है गाँव? अरे गाँव जानना है तो जुड़ो हियाँ के लोगों के साथ३. सामिल होओ उनके दुख–दरद में! लिखो कि सरकारी रेट पे मजूरी माँगने–भर से जिंदा आदमियों को भून के राख बना दिया। अउर जब इस जुलुम के खिलाफ किसी ने आवाज उठाये की कोसिस की तो मार दिया उसे३३।''

इस नाटक ने बुद्धिजीवियों और नागरिकों को जनसंघर्षों से जुड़ने का संदेश भी दिया। महेश शर्मा एसपी सक्सेना से कहता है– ''लेकिन हमें परमिशन नहीं है सर कि हम गाँव की समस्याओं और लोगों के साथ इनवॉल्व हों। फेलोशिप की पहली शर्त होती है यह। यह सारी की सारी एजुकेशन अज्ञान में रखना चाहती है हमको३नहीं चाहती कि हम अपने आसपास की असलियत को जानें, उससे जुड़ें। फार्म में भरकर देना होता है हमको कि हम सिर्फ देखेंगे३ तटस्थ होकर। जो कुछ गलत है, उस पर रिएक्ट नहीं करेंगे३ खून नहीं खौलने देंगे अपना। ३क्या मतलब है ऐसी एजुकेशन का।'' नाटक के अंत में जब बीसू के दोस्त बिंदा को पुलिस यातना दे रही है और तंत्र से जुड़े सारे लोग मौजमस्ती में व्यस्त हैं, तब वह सवाल करता है कि क्या इन हालात में बिना इन्वॉल्व हुए रह सकता है कोई? और इसी बिंदु पर बुनियादी संघर्षों के साथ जुड़ाव की जरूरत के संदेश के साथ नाटक का अंत होता है।

बिंदा की पत्नी रुक्मा की भूमिका में दिव्या गौतम ने पुलिसिया आतंक से परेशान आम मेहनतकश स्त्री का बेहद जीवंत अभिनय किया। थानेदार, दा साहब,

जमुना बहन, जोरावर, लखन, बिंदा, सुकुल बाबू, एसपी, डीआईजी, सम्पादक दत्ता व सहायक सम्पादक की भूमिकाओं में क्रमशः राम कुमार, अभिषेक शर्मा, समता राय, नीतीश, कुंदन, अभिनव, प्रमोद यादव, अंकुर राय, राजेश कमल, सुधीर सुमन और संतोष झा ने अपनी–अपनी भूमिकाओं के साथ पूरा न्याय किया। महेश, हीरा, नरोत्तम, जगेसर, काशी, पांडे जी, बीसू, लठैत और मोहन सिंह की भूमिका मृत्युंजय, राजन, हिमांशु, राहुल रौशन, विक्रांत चौहान, मुरारी, अमित मेहता, चौतन्य कुमार और रौशन ने निभाई। ग्रामीण समेत अन्य भूमिकाओं में अविनाश कुमार, रतन, सूर्यप्रकाश, रतन और रुनझुन थे। नाटक का निर्देशन संतोष झा ने किया। सहनिर्देशक सुमन कुमार थे। प्रकाश परिकल्पना विज्येंद्र टाँक तथा मंच परिकल्पना अभिषेक शर्मा की थी। उद्घोषक डीपी सोनी थे। नेपथ्य की अन्य भूमिकाओं और जिम्मेवारियों में विनय राज और युसूफ अली थे। इस अवसर पर शहर के कई महत्वपूर्ण रंगकर्मी, साहित्यकार–संस्कृतिकर्मी और बुद्धिजीवी मौजूद थे। किसी सरकारी मदद के बिना और एनजीओ या कारपोरेट्स की फंडिंग के बगैर भी सिर्फ जनसहयोग के बल पर भी तीस–तीस पात्रों वाले मंचीय नाटक का प्रदर्शन सम्भव है, पटना में जसम की गीत–नाट्य इकाई हिरावल ने 'महाभोज' के दो दिवसीय मंचन के जरिय इसका उदाहरण पेश किया। जहाँ पुरस्कारों और प्रलोभनों के जरिय संस्कृतिकर्मियों, कलाकारों और साहित्यकार–बुद्धिजीवियों को खरीद लेने और वैचारिक तौर पर लूट की सत्ता में उन्हें साझीदार बना देने का सिलसिला जारी है, वहीं हिरावल ने अपनी वैचारिक स्वतंत्रता और स्वाभिमान को बनाए रखने और संस्कृतिकर्मियों की सामूहिकता को ताकतवर बनाने की कोशिश की है। रंगकर्म की दुनिया में इस वैचारिक संघर्ष ने एक प्रतिबद्ध दर्शक वर्ग का भी निर्माण किया है, 'महाभोज' के मंचन के दोनों दिन दर्शकों की अच्छी खासी मौजूदगी ने जिसका जबर्दस्त तरीके से अहसास कराया। कमाल यह कि इतने गम्भीर और पात्रबहुल इस नाटक को हिरावल के कलाकारों ने महज 27 दिनों में तैयार किया!

जनवादी सरकार के समाजवादी फैसले : अनुराग

मनमोहन सरकार से पहले इस तरह की समाजवादी और वैज्ञानिक सोच वाली सरकार स्वंतत्र भारत के इतिहास में

कभी नहीं आई। भविष्य के बारे में दावे के साथ कुछ नहीं कह सकता। वैसे हमारे राजनेताओं में जिस तरह की सोच विकसित हो गई है, उससे तो उम्मीद है कि आने वाली सरकारें मनमोहना से भी बढ़कर समाजवादी और वैज्ञानिक सोच की होंगी। वह भारत कितना खूबसूरत होगा, जिसमें एक भी गरीब नहीं बचेगा। बस अमीर ही अमीर होंगे।

करीब चालीस साल पहले श्रीमती इंदिरा गांधी ने नारा दिया था– गरीबी हटाओ। उसके बाद जनता पार्टी, कांग्रेस, जनता दल, समाजवादी जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी आदि कई पार्टियों की सरकारें आईं और गईं, लेकिन कोई भी गरीबी नहीं हटा सका। इसलिए मनमोहन सरकार ने दिल पर पत्थर रखकर गरीबों को ही हटाने का निर्णय ले लिया। एक समझदार शल्य चिकित्सक बीमारी को जड़ से ही खत्म करता है। भले ही इसके लिए रोगी को बीमारी से भी गहरा जख्म क्यों न देना पडे। निःसंदेह इससे रोगी को तात्कालिक तकलीफ होती होगी, लेकिन यह उसी के हित में होता है। देश में सभी समस्याओं की जड़ गरीब हैं। इन्हें रोटी चाहिए, मकान चाहिए, शिक्षा चाहिए, दवा चाहिए और भी न जाने क्या–क्या। इनकी जरूरतें कभी पूरी ही नहीं होतीं। देश अंतरिक्ष में पहुंच गया, इससे इन्हें खुशी नहीं मिलेगी। देश में आलीशान मॉल खुल रहे हैं, बडे–बडे हाईवे बन रहे हैं, लेकिन ये बात केवल रोटी की करेंगे। इतना भी नहीं समझते कि रोटी नहीं मिल रही है तो बोटी खा लो और देश के विकास के बढ़ते ग्राफ को देखकर खुश रहो। कुल मिलाकर गरीब देश के विकास और तरक्की में धब्बा हैं। सरकार कुछ कठोर निर्णय लेकर देश की बीमारियों की जड़ को ही समाप्त कर देना चाहती है तो इसमें किसी को ऐतराज नहीं होना चाहिए।

महान वैज्ञानिक डार्विन का सिद्धांत है कि पृथ्वी पर अस्तित्व बचाने के लिए निरंतर संघर्ष चलता रहता है। इसमें दुर्बल नष्ट हो जाते हैं और सक्षम बच जाते हैं। इतिहास गवाह है कई जीवों की प्रजातियां संघर्ष न कर पाने के कारण नष्ट हो गईं। गरीब नामक प्रजाति भी संघर्ष न कर पाने या खुद को परिस्थिति के अनुकूल नहीं ढाल पाने के कारण नष्ट हो जाती है तो इसमें किसी का क्या कसूर।

समय–समय पर पेट्रोल, डीजल के दाम बढ़ने से खाद्य पदार्थों के दाम भी बढ़े हैं। गरीब खाद्य पदार्थ खरीद नहीं पा रहे हैं और जले में नमक यह कि वे जितने चाहे सब्सिडी वाले गैस सिलेंडर खरीद सकते हैं। इसलिए सरकार ने ऐसे सिलेंडर की संख्या भी सीमित कर दी है। जब खाना खरीदने की ही औकात नहीं है तो सब्सिडी पर सिलेंडर देने का क्या फायदा। और जो खरीद सकते हैं, उन्हें सब्सिडी की जरूरत नहीं है।

मनुष्य में अधिकांश बीमारियों की जड़ मोटापा यानी अधिक खाना है। महंगाई बढ़ने से लोगों का अनाप– शनाप खाना कम हो जाएगा। वे जैसे–तैसे करके जीने लायक ही खा पाएंगे। इससे वे मोटापा का शिकार नहीं होंगे। और उनका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। इसके बावजूद यदि कोई नासमझ मोटापा बढ़ा ले तो उसे दुरूस्त करने के लिए डीजल, पेट्रोल के दाम फिर बढ़ाए जाएंगे। इससे वह अधिक से अधिक पैदल चलेगा और स्वस्थ रहेगा। फिर भला उससे धनी कौन होगा। कहा भी गया है– हेल्थ इज वेल्थ।

आज के दौर में लोकतंत्र की चुनौती ही आलोचना की चुनौती है : राजेंद्र कुमार

इलाहाबाद। वरिष्ठ आलोचक प्रोफेसर मैनेजर पांडेय के जीवन के 71 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 23 सितम्बर को 'जन संस्कृति मंच' की ओर से इलाहाबाद में 'आलोचना की चुनौतियाँ' विषय पर प्रोफेसर राजेंद्र कुमार की अध्यक्षता में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। राजेंद्र कुमार ने कहा कि आज के समय में जो चुनौतियाँ लोकतंत्र के समक्ष हैं, वही आलोचना की भी चुनौतियाँ हैं। उन्होंने बताया कि साहित्य में आलोचना विधा का आगमन गद्य के उद्भव के साथ होता है। पश्चिम में यह पूँजीवादी लोकतंत्र के साथ जन्म लेती है। आज भारत में यह लोकतंत्र भी चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसका संकट और इसकी चुनौती आज की आलोचना की भी चुनौती है। उन्होंने कहा कि आज की आलोचना को एक समझ और तमीज विकसित करनी चाहिए जो यह पहचान सके कि साहित्य में विचारधारा को गैर–जरूरी बताने वाले खुद किस विचारधारा को स्वीकार्य बनाना चाहते हैं। उत्तर आधुनिकता, जो 'सब–कुछ' को 'पाठ' बनाती है, वह अपने आप में खुद एक विचार का आरोपण है। प्रतिरोध की चेतना की पहचान ही आलोचना को महत्वपूर्ण बनाती है। आलोचना का काम रचनाकार को छोटा या बड़ा सिद्ध करना नहीं है।

इतिहासकार और सामाजिक कार्यकर्ता लाल बहादुर वर्मा ने कहा कि आज आलोचना की चुनौती यह है कि साहित्य को साहित्य, और समाज को समाज बनाए रखने में मदद करे क्योंकि आज पूँजीवाद इसी को खत्म कर देना चाहता है। उन्होंने कहा कि आलोचना के लिए जन–सरोकार होना जरूरी है। आलोचना एक उपकरण भी है, जिसे चलाना मालूम होना चाहिए। आज आलोचना को साहित्य के लिए मशाल होना चाहिए। वह साहित्य और जन के बीच पुल है।

आलोचक और कथाकार दूधनाथ सिंह ने कहा कि विचारधारा और साहित्य–रचना का जो तनाव है वह आलोचना में होना चाहिए, उसे नजर–अंदाज नहीं किया जाना चाहिए। सामाजिक शक्तियों के जो संघर्ष हैं, साहित्य उन्हें प्रतिबिम्बित करे।

रविभूषण (राँची) ने कहा कि आलोचना जीवन और समय–समाज सापेक्ष होनी चाहिए। आज के संकट के समय में आलोचना को राजनीतिक प्रश्घ्नों से भी जूझना होगा।

आलोचक गोपाल प्रधान (दिल्ली) ने आलोचना के वर्तमान पर टिप्पणी करते हुए कहा कि आज क्षणिक किस्म के परिवर्तनों का उत्सवीकरण हो रहा है और आलोचना के भीतर से इतिहासबोध को विलिपित किया जा रहा है। जब कि हिन्घ्दी आलोचना अपने प्रारम्भ से ही सिर्फ साहित्य–आलोचना नहीं रही बल्कि उसने व्यापक सामाजिक सरोकार रखते हुए समाज और देश की आलोचना की। इतिहासबोध उसमें एक जरूरी तत्व रहा है। उन्होंने कहा कि देश का शासक–वर्ग इतना देशद्रोही शायद ही कभी रहा हो, जितना कि आज का शासक–वर्ग है। उसके भीतर के भय का आलम यह है कि वह कार्टून भी बर्दाश्त नहीं कर पा रहा है। उन्होंने अत्याधुनिक तकनीकी के साथ अत्यंत पिछड़ी हुई सामाजिक चेतना के मेलजोल के खिलाफ आलोचनात्मक संघर्ष चलाने की आवश्यकता बताई।

पंकज चतुर्वेदी (कानपुर) का कहना था कि आलोचना अगर रचना में मुग्ध हो जाएगी तो वह रचना को ठीक से देख नहीं पाएगी। आलोचक को रचना की संशक्ति के साथ उससे दूरी भी बनाए रखनी होगी तभी वह रचना के महत्व को रेखांकित कर पाएगी। तमाम आलोचक दूरी बनाते हैं लेकिन संशक्ति गायब है। आलोचना को रचना से, उसके रचना कर्म से संबोधित होना होगा। आज के आलोचक पारिभाषिक शब्दावलियों के गुलाम हैं। पूरी आलोचना इन्हीं बीस–पच्चीस शब्दों से काम चलाती है। पारिभाषिक शब्दों की यह गुलामी रचना और आलोचना के बीच एक परदे का काम करती है। आलोचना को नये शब्द ईजाद करने होंगे। उन्होंने रचना और आलोचना में विचारधारा की आबद्धता को गैर जरूरी बताते हुए कहा कि जनता के प्रति सम्बद्धता जरूरी है लेकिन विचारधारा से आबद्धता जरूरी नहीं।

प्रोफेसर चंद्रा सदायत (दिल्ली) ने कहा कि आज के दौर के अस्मितावादी विमर्श आलोचना का ही हिस्सा हैं। इसे और व्यापक बनाने के लिए अन्य भाषाओं के (अस्मितावादी विमर्शों के) अनुवाद को भी इसमें शामिल किया जाना चाहिए या फिर आलोचना को कम से कम उनका संदर्भ तो लेना ही चाहिए।

प्रज्ञा पाठक (मेरठ) ने कहा कि स्त्री के जीवन और साहित्य को अलग कर के देखने से उसके साहित्य का सही मूल्याँकन नहीं हो पाएगा। तमाम लेखिकाएँ भी इसमें भ्रमित होती हैं। आलोचना में अभी भी स्त्री–रचना पर बात करने में पुरुषवादी सोच का दबाव काम करता है। स्त्रियाँ भी स्त्री–विमर्श या रचना पर बात करते समय इसी प्रभाव को ग्रहण कर लेती हैं। स्वतंत्र और व्यक्तित्ववान स्त्री आज भी आलोचना के लिए चुनौती है।

अपने जन्मदिन के मौके पर, संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रोघ्फेसर मैनेजर पांडेय ने कहा कि विचारधारा के बिना आलोचना और साहित्य दिशाहीन होता है। आलोचना में पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग ईमानदारी से होना चाहिए क्योंकि पारिभाषिक शब्द विचार की लम्बी प्रक्रिया से उपजते हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य की सामाजिकता की खोज और सार्थकता की पहचान करना ही आलोचना की सबसे बड़ी चुनौती है। इस अवसर पर राहुल सिंह (बिहार), रामाज्ञा राय (बनारस) आदि वक्ताओं ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र, बुद्धिजीवी, सामाजिक कार्यकर्ता एवं संस्कृतिकर्मी उपस्थित रहे। संगोष्ठी का संचालन जन संस्कृति मंच के महासचिव प्रणय कृष्ण ने किया। इससे पहले कॉ. जिया उल हक ने प्रो. मैनेजर पांडेय को उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

इस मौके पर प्रो. मैनेजर पांडेय के आलोचना कर्म पर केंद्रित दो पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ। इनमें से पहली पुस्तक 'मैनेजर पांडेय का आलोचनात्मक संघर्ष' युवा आलोचक तथा जसम के महासचिव प्रणय कृष्ण द्वारा लिखित तथा जसम के सांस्कृतिक संकुल द्वारा प्रकाशित है। दूसरी पुस्तक 'आलोचना की चुनौतियाँ' का सम्पादन दीपक त्यागी और राजेश्वर चतुर्वेदी ने किया है जिसमें पाण्डेय जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अनेक लेख संकलित हैं ।

भारत में होता है आतंकवादियों का स्वागत

❏ अखिलेश गुप्ता

एक तरफ आज हिन्दुस्तान आतंकवाद और भ्रष्टाचार कि भयावह समस्या से जूझ रहा है वही पर आज आये दिन हो रहे देश के उपर आतंकी वारदातो कि घटनाओ से तंग आकर आज देश का हर तीसरा युवा खौफ के साये में अपना जीवन बिताने को विवस है भारत आज सबसे अधिक अगर परेशान है तो वो है आतंकवाद कि समस्या से लेकिन ये आतंकवाद फैला कहा से अखिर कैसे अपने देश के संसद के चौखठ तक पहुच जाते है ये आतंवादी क्या इसमें हमारे देश के जवानो कि गलती नही है क्या इसमें हमारे देश के युवाओ कि गलती नही है सवाल यहा पर ये खड़ा होता है कि आज हमारे देश के युवाओ का कन्धा इतना कमजोर हो गया है कि वो अपनी एक जिम्मेदारी ना उठा सकते आज का युवा वर्ग बुरी आदतो और अकर्मठता का शिकार होता जा रहा है जरा से पैसे कि लाजच पाकर वो भुल जाता है देश के प्रति अपनी निष्ठा और शामिल हो जाता है वो भी मौत के इस खूनी खेल के सफर में तभी तो कभी संसद के भीतर कोई ब्लास्ट हो जाता है और कभी मुबई जैसे बड़े शहरो में सिरियल ब्लास्ट हो जाता है अगर बात कि जाए अपने देश कि सुरक्षा व्यवस्था कि तो ये भी पुरी तरह से ढिली होती जा रही है यहा पर ढिली कहने का मतलब ये कि आज हमारे देश में आतंकियो को जेल में रखकर उनकि पुरी खातिरदारी कि जाती है उन्हे किसी प्रकार कि समस्या या खाने पीने में कोई कमी नही बरती जाती है मुंबई हमले का आतंकी अजमल कसाब को अभी तक सरकार किसी प्रकार कि सजा नही दे पाई है वही पर सूत्रो कि माने तो कसाब ने जेल में शाकाहारी खाना खाने से मना कर दिया था उसकी मांग थी कि उसे खाने में बिसियानी दिया जाए ठिक इसी तरह का कुछ अंदाज है आतंकवादी जुदाल का जिसका कहना है कि उसे रोजा अफतार के लिए रोज दूघ मलाई और मटन चिकन मिलना चाहिए वही पर सुरक्षा अधिकारियो का कहना है कि वो किसी के धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुचाना नही चाहते इसलिए उसकि मागे हम पूरी करते रहते है वही पर उसकी गिरफ्तारी के बाद से ही उसके परिवार से कोई परिजन उससे मिलने नही आया अब सवाल यहा ये उठता है कि क्या भारत में इनके दवारा किये गए जुर्म कि कोई सजा नही बची है या हमारी सरकार बस इन आतंकियो का सेवा पानी करने में ही लगी रहेगी।

गज़ल

रहते हैं हम जहाँ हर दुकान से उधार लेते हैं,
कर्ज जब बढ़ जाता है तो मुहल्ला बदल देते हैं।

दोस्तों से लड़-झगड़ कर उधार मांग लेते हैं,
गुर्बत में जिन्दगी का हम यूं ही मजा लेते हैं।

गोया के अभी तक किया नहीं कर्ज किसी का
पर देने की तमन्ना दिल में लिए फिरते हैं।

उधार की ठाट बाट लिए जब हम सड़कों पर चलते हैं,
देखकर अदायें मेरी सभी अमीर जलते हैं।

गुर्बत में भी यूँ बेलौस जीना देखकर मेरा,
है सभी हैरत में क्या नाकारा भी ऐसे जीते हैं।

बेकार हुए तो क्या गम है यारों,
हंस कर जीने का फन तो हम जानते हैं।

मुदस्सिर इलाहाबादी

Email.: modas_1980mohammed@yahoo.co.in

क्या बेटियाँ होना है हमारा कसूर?

fç;adk lkue

bl'oj us gj fj'rs dks dkQh [kclwjrh ls cuk;k gS ij ge euq"; mu fj'rksa dh vgfe;r ugha le>rs A bnkj dh ikp lky dh ekle cPph dk ;s dgka irk Fkk fd bl /kjrh ij mldh vk;q dsoy ikp lky dh FkhA 26 flrEcj] c/kokj dh jkr bnkj ds jktho vkokl fogkj es dN ,sls gvk ftls lqu dj gkFk ikoa dkius yxrs gSA ;g ekle cPph ftls bldk firk us dN lkyks igys viuh Hkkbl ls xksn fy;k FkkA jkts'k flxkj us viuh xksn yh gbZ cVh ds lkFk n"deZ djus ds ckn viuh iRuh cch ds lkFk feydj mldh ºR;k dhA jkts'k flxkj ds iMkslh us tc jkts'k vkSj mldh iRuh dks ,d cSx esa ekle cPph dks ys tkrs ns[kk rks mlds iNus ij jkts'k vkSj cch us cPph dh rfc;r [kjkc gksus dh ckr dgh vkSj ;s Hkh dgk fd os mls M,DVj ds ikl ys tk jgs gSA ,d vyx okD;k pMhx<+ dk gS]tgka ,d cPph viuh firk ds nksLrks ds xqn bjknks dh f'kdkj gks x;hA 27 flrEcj] x#okj dh jkr blds firk ds nks nksLrks us u'ks dh gkyr esa n"deZ fd;kA ;g cPph viuh thou ds fy, vHkh Hkh vLirky esa l?k"kZ dj jgh gSA D;k ;s budh yMfd;ksa gksus dh ltk gS \ budk dlwj D;k Fkk tks bUgsa ;s fueZe ltk feyh\ D;k ;s ckrsa dgha ljf{kr ugha gS \

13th International Conference on Mobility & Transport for Elderly & Disabled

New Delhi, September 18th, 2012: TRANSED 2012- the 13th International Conference on Mobility and Transport for Elderly and Disable people was inaugurated today by Smt. Sheila Dikshit, Hon'ble Minister, Governemnt of NCT of Delhi. Hosted by Svayam, the theme of TRANSED 2012 is "Seamless access for all: Universal Design in Transport system and built infrastructure, a key element in the creation of livable cities.' Present at the inaugural ceremony were personalities like Dr. Sudhir Krishna, Mr. Ramakant Goswami, Mr. Steven Fletcher etc.

Speaking on the occasion, Hon'ble Chief Minister of Delhi-Smt. Sheila Dikshit said "Delhi is proud to host TRANSEd 2012 for the first time in India. Our Government has been working closely with Svayam, the host of TRANSED 2012, to make our city accessible for all. We have worked together to make places like Qutub Minar, Red Fort, bus Q shelters, public conveniences etc accessible. It's my pleasure to welcome the participants and the foreign delegates of TRANSED to Delhi and we hope that TRNSED will help raise awareness and sensitize people to the cause of accessible and inclusive environment.

TRANSED 2012 will not only help us address the challenges associated with improving mobility and transportation needs for the elderly and disabled but will make us work towards making India barrier free", she further added.

Speaking on the occasion, Ms. Sminu Jindal, founder of Svayam said "Svayam is proud to host TRANSED for the first time in India. We are thankful to our partners Government of Delhi, Ministry of Urban Development and Ministry of Transport. We believe TRANSED is a great platform to share experiences and participate in promoting accessible environment for all. Svayam believes that it is necessary to cater to the needs of the elderly and disabled and create public friendly infrastructure and transport across the nation. Recognizing the importance of accessibility for all will enable everyone to lead a dignified and independent life. The change that we are all working towards will definitely happen if accessibility becomes a movement involving each one of us."

Svayam will also host the first ever 'Accessibility awards' to be held on September 19th at The Lalit. These awards will honour the organizations involved in making India accessible by providing inclusive infrastructure for all. These awards will play a pivotal role in encouraging the development of policies, practices and relationships to ensure that achievements on accessibility are sustainable and meaningful. Mr. Arvinder Singh, Hon'ble Minister of Urban Development, Govt of NCT of Delhi will be the Chief Guest for the occasion.

"To be able to independently access the built environment is the right of every individual with reduced mobility. Accessibility or design-for-all should mean equal access, that is, a disabled person should be able to independently board a bus, enter a restaurant, access all parts of the hotel, use a public convenience, visit a historic monument and watch a movie. TRANSED 2012 is a step in the right direction which will provide mobility solutions to all and will help us make India accessible", Sminu added.

Svayam was awarded the bid for the 13th TRANSED at Transport Research Bureau of USA against Germany and South Africa. The objective of TRANSED 2012 is to review advances in research, profile international breakthroughs and explore perspectives for technological innovations in response to the mobility challenges of an ageing population and person with disablilites. It also aims to examine ways to address challenges associated with improving mobility and transportation needs for the elderly and disabled. Svayam works towards providing an equitable infrastructure and transportation system to all and believes that TRANSED 2012 will inspire us to find mobility solutions not only for urban but also for rural India as well.

62 Year old Teacher Murdered in Timarpur, Delhi

Chandra Kant Singh

Just after day of Senior Citizens Camp organised in the Teacher's Colony of Timarpur by Delhi Police. A sixty two years old lady TGT teacher got Murdered in the flat number no. B-119 of the same colony. Neighbours told "Her name was Mrs. Madhu Mehra, She was science teacher in SKV, Nehru Vihar and she used to teach science to 8th and 9th class students. Her husband and a 15 year old child had already expired in a road accident in 1993, so she was living alone at her house". They also said Mrs. Mehra was seen drying clothes in balcony around 11.00 am. Around 2.00 pm Mr. Rajendra Kumar (Mrs. Mehra's so-called brother) visited her house and saw the main door was left open. And when he entered the house he noticed Mrs. Mehra was lying on floor and she was tied. Her legs and her hands were tied and a bunch of clothes were filled in her mouth. Mr. Kumar stood shocked and called Police and recited the whole matter. Around 2.15 pm police reached the spot. Body has been sent for post-mortem by Crime Branch. They started theie investigations with different angles. Around 5.33 pm, Deputy Commisioner of Delhi Police came down of the flat and said "Mrs Mehra is murdered by srabbing with a knife. Other things can be cleared out after post mortem comes out. Other than this case can be of looting and meanwhile Mrs. Mehra got murdered. We are looking into the case. Mr Rajendra Kumar is in our custody and we are investigating him".

चलो सुनाओ नयी कहानी

अगर सुनानी तो नानू बस
झट सुना दो एक कहानी
देर करोगे तो सच कहती
अभी बुलाती हूँ मैं नानी

बोली डोलू बहुत 'बिजी' हूँ
तुम तो नानू बिल्कुल खाली
कितने काम पड़े हैं मुझको
नहीं मैं ज्यादा रुकने वाली

टीवी अभी देखना मुझको
होम वर्क अभी करना है
कम्प्यूटर पर अभी खेलना
फोन सहेली से करना है

नानू इसीलिए कहती हूँ
झट कहानी मुझे सुनाओ
चली गई तो पछताओगे
मत इतना नानू इतराओ

नहीं आऊँगी नानू फिर मैं
चॉकलेट भी अगर दिखाओ
शुरू करो अब शुरू करो न
चलो कहानी अभी सुनाओ।

सोचूँगी नानू हैं बुद्धू
अगर सुनाई नहीं कहानी
पुस्तक से ही पढ़ लूँगी मैं
एक नई से नई कहानी।

&fnfod je'k

'कवि के साथ' का आयोजन तीस सितम्बर को

नई दिल्ली। इंडिया हैबिटैट सेंटर द्वारा शुरू की गई काव्य–पाठ की कार्यक्रम श्रृंखला 'कवि के साथ' के छठे आयोजन में इस बार वरिष्ठ कवि मदन कश्यप के साथ मुकुल सरल और कुमार अनुपम का काव्य पाठ हुआ। कार्यक्रम 30 सितम्बर को शाम सात बजे गुलमुहर हाल, इंडिया हैबिटेट सेंटर, दिल्ली में शुरू हुआ। कवि और कविता से कविताप्रेमी हिन्दी समाज का सीधा संपर्क–संवाद बढ़े, यही इस आयोजन का उद्देश्य था।
तीनों कवियों की एक–एक कविता–

छिपना
मुखौटों से झाइयाँ नहीं छिपतीं
पूरा का पूरा चेहरा छिप जाता है
सबको पता चल जाता है
कि सब कुछ छिपा दिया गया है
भला ऐसे छिपने–छिपाने का क्या मतलब
छिपो तो इस तरह कि किसी को पता नहीं
चले कि तुम छिपे हुए हो
जैसे कोई छिपा होता है हवस में
तो कोई अवसरवाद में
कुछ चालाक लोग तो
विचारधारा तक में छिप जाते हैं
कोई सूचनाओं में छिप जाता है
तो कोई विश्लेषण में
कोई अज्ञान में तो कोई इच्छाओं में
और कवि तो अक्सर अपनी कायरता में
छिपा होता है ।

मदन कश्यप

Newspaper Association of India 20th Annual Conference and National Achievement Award-2012

❑ **NAI DESK**

Newspapers Association of India (NAI) which represents the press at the grassroots level in almost all languages and territories of the country, and which constitutes the core of the press community in this country since its inception in 1993, has endeavored to bring the Small and Medium newspapers and media organization from the length and breadth of our great country together under the ambit of one platform . Until now we were successful in bringing together approximately 7000 such entities as active members under our umbrella. These newspapers are published in Hindi, English and other vernacular languages. Together they enjoy a reach to every nook and corner of the country. Our association actively takes up matters relating to the difficulties being faced by the publishers of these newspapers and also disseminates information useful to them from time to time. The Conference would be focusing on the role that the regional newspapers play in the strengthening of this World's largest democracy. The emphasis would be on how the regional newspapers strengthen our democratic institutions with adherence to secular credentials. The strength of our democracy lies in the dissemination of information and these regional

and vernacular language newspapers with their reach deep in the hinterland can and plays an effective role in the propagation of democratic ideas and advantages of people power.

Publishing on 10th of every month
RNI No. 62500/95
REGD. No. DL (E)-01/5149/2012-2014
LICENCE TO POST WITHOUT
PRE-PAYMENT No. U(C)223/12-14

To,

If undelivered, Please return to:
न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन
ऑफ इण्डिया
POST BOX 9235, NEW DELHI-110 092

यदि आप लेख, रचना, समाचार, विचार प्रेषित करना चाहते हैं तो आप अपने अप्रकाशित लेख निम्न पते पर भेजें।

आपको ***NAI*** का यह अंक कैसा लगा, इस बारे में अपने सुझाव हमें निम्न पते पर भेजें।

एन. ए. आई.
A-115, Vakil Chambers, Top Floor,
Shakarpur, Delhi-110092, Ph.: 011-22058133

Editorial Board

Founder	Late Dr. M. R. Gaur
Editor Publisher-Printer	Vipin Gaur
Counsultant Editor:	Dr. Smita Mishra
Managing Editor:	Dilip Kumar
Legal Advisors:	Nikhat Anjum Malik
Advocate Delhi Highcourt	Rajesh Sharma
	Adv. P. Yadav
Office Secretary	Kavita Bamotra

- Bureau Chief -

Guwahati:	Runu Hazarika
Mumbai:	Mr. Dinesh K. Mishra
Bangalore:	Mr. M. K. Jain
Jaipur :	Mr. Banwar Singh Ranawat
Chennai:	Mr. P.C.R. Suresh
M.P. & C.G.	Mr. O. P. Jain
Kerela	Mr. Suvarna Kumar
Goa	Dr. Vivek Gaitonde

"Nominations Open" News Papers Association of India Achievement Award-2012 and 20th Annul Conference

In the field of Journalism & Social Activities NAI Awards 2012, submissions open The News Papers Association of India invites journalists from developing India and the Pacific to submit published articles written, News, Videos, Photos, Social Activities, Agriculture or Rural Documenters' in January / 2012 to November / 2012 in connection with the 2012 annual Developing NAI Journalism Awards.

If you are interested in participating in the 2012 NAI Award program, please Send Your Port Folio. In C.D or You Can mail at: - naiindia@gmail.com

Statement of Terms and Conditions

Articles , News , Videos , Photos , Social Activities , Agriculture or Rural Documenters must be published And Telecast works and may have appeared in a regional newspaper, magazine, news wire service or website between 1 January 2012 to 31October 2012.

The judges shall not be bound to award a prize in any categories where they do not feel that the quality of entries merits it.

Submission deadline for NAI Awards 2012 is 7TH November 2012 , 6 pm Indian time.

If you need any help
Contact to
Office Secretary
News Papers Association of India A/115 4th floor Vakil Chamber, Shakarpur
Vikas Marg , Delhi - 110092
011- 22058133 , 9971847045
Visit as:- naiindia.com
e-mail :- contact@naiindia.com

Suryabhan Singh Rajput
President (Editor – Nand Darshan Daily)
Mob- +91 9923199115
E-mail :- nanddarshandaily@gmail.com

Vipin Gaur
General Secretary (Editor In Chief – The Indian Majesty)
Mob. 9810226962, 9718919456
E-mail :- nai.newsmedia@gmail.com

The Special Award is - Dr. M.R Gaur Lifetime Struggle & Achievement Award

In Electronic Media	Best Reporter
Best News Channel	Best Colam Writer
Best News Anchor	Best Photographer
Best Reporter	***Other Categories***
Best Cameraman	Best NAI State Committee
Best Editor	Best RTI Activist
In Print Media	Best Documentary For rural Development
Best News Agency	Best Radio Station
Best Magazine	Best Radio Jockey
Best Regional Newspaper (Daily , Weekly , Monthly , Fortnightly)	Best Social Worker
	Best Social NGO
Best Editor	Eminent Personalities

न्यूज़पेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया का 20वां राष्ट्रीय अधिवेशन

❑ एनएआई डेस्क

न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया के द्वारा पत्रकारिता व सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र मे, एनएआई पुरस्कार 2012 के लिए न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया का राष्ट्रीय सम्मलेन।

न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया भारत के पत्रकारों व समाज सेविओं को आमंत्रित करता है जिनका सहयोग भारत को विकासशील और प्रगतिशील बनाने मे रहा है और उन कार्यों को लेख , समाचारपत्र , वीडियो, तस्वीरों , सामाजिक गतिविधियों, द्वारा प्रकाशित व प्रसारित किया हो व कृषि व ग्रामीण विकास के कार्यों मे अपना सहयोग दिया हो हर साल की तरह इस साल भी न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया भारत के पत्रकारों व समाज सेवियों को पुरुस्कार से सम्मानित करेगा न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया १६ सालों से पत्रकारों की सेवा करने व उनकी समस्यों का समाधान करने पे लगी है पत्रकारिता के क्षेत्र मे कार्य करने वाले लोग देश की जनता की समस्या को सामने लाते है पर अपनी समस्या को किसी से नहीं बताते हैं उन पत्रकारों व समाज सेवियों को सलाम व सम्मान आप अपने प्रकाशित लिखा लेख, समाचार, वीडियो, तस्वीरें, सामाजिक गतिविधियों, कृषि व ग्रामीण विकास पर लघु फिल्म हमे भेजें यदि आप 2012 एनएआई पुरस्कार कार्यक्रम में भाग लेने में रुचि रखते हैं, तो कृपया अपने पोर्ट फोलियो भेजें. सीडी या मेल कर सकते हैं: –naiindia@gmail.com हमारी वेबसाइट मे सारी जानकारी www-naiindia.com

इस पुरस्कार कार्यक्रम मे देश के 24 राज्यों के संपादक, प्रकाशक, पत्रकार हिस्सा लेंगे समाचार पत्रों व समाचार जगत मे कार्य करने वाले संपादको, प्रकाशकों, पत्रकारों की समस्याओं पर चर्चा की जाएगी व उनका समाधान कैसे किया जाए सभी सवालों को सरकार के सामने रखा जाएगा व उन सभी समस्यों को हल करने की मांग की जाएगी देश के संविधान की मर्यादा के पालन को लेकर सामाजिक हितो की राष्ट्रीय आवाज बनाने मे लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप मे इस मीडिया शक्ति से बड़ा कोई भी लोकपाल वैकल्पिक जवाबदेही नहीं निभा पा रहा है जिसे जनतंत्र की आवाज कहा जा सके। समाचार पत्रों के प्रतिनिधि समाज प्रहरियों की भूमिका ने है देश की आजादी की लड़ाई से लेकर आजतक भारत को विश्व सचेतक बनाने की मंजिल को आसन रास्ता दिया है। मीडिया ने राजनैतिक कुशलता प्रोत्साहित करने मे कई सहायिक कदम उठाए है। इस समारोह मे मीडिया के हको की आवाज को उठाने के साथ साथ मीडिया प्रहरिओं की सुरक्षा के लिए राज्यों की नीतिओं के बदलाव के लिए भी जोर दिया जाएगा।

Printed, Published by Vipin Gaur on behalf of News papers Association of India, Printed at Mayank Offset Process 794/95 Guru Ramdas Nagar Ext. Laxmi Nagar Delhi-92 and Published from J-51, DLF Dilshad Delhi-95, Editor: Gayatri Gaur. All disputes settled in Delhi Court only.